मार्कण्डेय पुराण

(द्वितीय खण्ड)

(सरल भाषानुवाद सहित)

*

सम्पादकः

वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

चारों वेद, १०८ उपनिषद, षट् दर्शन,

२० स्मृतियाँ और १८ पुराणों के

प्रसिद्ध भाष्यकार

昭和46年度科学研究費購入図書

寄贈 東外大・東洋文化研 合同海外学術調査団 氏

東京外国語大学 157010 47. 3. 31 図書館蔵書

प्रकाशकः

संस्कृति संस्थान

ख्वाजा कुतुब (वेद नगर) बरेली

प्रकाशक :

डा० चमन लाल गौतम
संस्कृति संस्थान
ख्वाजा कुतुब (वेद नगर)
बरेली (उ० प्र०)

*

सम्पादक :

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

*

सर्वाधिकार सुरक्षित

*

द्वितीय संस्करण

१९६९

*

मुद्रक :

बनवारीलाल गुप्त
विश्व भारती प्रेस
मथुरा

*

मूल्य सात रुपया

मार्कण्डेय पुराण के द्वितीय खण्ड की

विषय-सूची

५१. भद्राश्वादिवर्ष वर्णन—भद्राश्ववर्ष, केतुमालवर्ष, कुरुदेश आदि का भौगोलिक वर्णन ८

५२. किम्पुरुषादि वर्णन—किम्पुरुषवर्ष, हरिवर्ष, मेरुवर्ष, इलावृत्त रम्यकवर्ष, हिरण्मयवर्ष, आदि के निवासियों का परिचय १३

५३. स्वारोचिष मन्वन्तरारम्भ (२)—अरुणास्पद नगर निवासी ब्राह्मण और वरूथिनी अप्सरा की कथा १५

५४. कलि वरूथिनी समागम—कलि नामक गन्धर्व का छद्मवेश धारण करके वरूथिनी को अपने आधीन करना २७

५५. स्वरोचि का जन्म और विवाह—मनोरमा के साथ स्वरोचि का विवाह और उसकी दो सखियों को रोगमुक्त करना ३२

५६. स्वरोचि के अन्य विवाह—विभावरी और कलावती के साथ स्वरोचि का विवाह ४१

५७. चक्रवाक और मृग का तिरस्कार—स्वरोचि की कामुकता देख कर चक्रवाकी और मृग द्वारा उसका तिरस्कार ४४

५८. स्वारोचिष मनु की उत्पत्ति—वन की अधिष्ठात्री देवी के साथ स्वरोचि का समागम और स्वारोचिषमनु का जन्म ४८

५९. स्वारोचिष मन्वन्तर कथन ५५

६०. निधि-निर्णय—अष्ट निधियों का विवरण और उनका प्रभाव ५६

६१. औत्तम मन्वन्तर आरम्भ (३)—उत्तम राजा द्वारा रानी का परित्याग—ब्राह्मण-पत्नी का हरण—पत्नी-त्याग के कारण उत्तम राजा की अवमानना ६३

६२. द्विजभार्या को पति के घर भेजना—राक्षस के उन्धन से द्विज-पत्नी की मुक्ति ७३

६३. ऋषि से उत्तम का कथोपकथन ७९

६४. औत्तम मनु की उत्पत्ति—उत्तम राजा का अपनी रानी को पुनः प्राप्त करना और औत्तम का जन्म ८३

६५. औत्तम मन्वन्तर कथन ८०
६६. तामस मन्वन्तर–स्वराष्ट्र राजा का राज्यच्युत होना नदी में मृगी से भेंट–तामस का जन्म और शत्रुओं पर उसकी विजय ८२
६७. रैवत मन्वन्तर–रेवती नक्षत्र के गिरने से एक कन्या का जन्म और महाराज दुर्गम से उसका विवाह और रैवत मनु की उत्पत्ति १०१
६८. चाक्षुष मन्वन्तर–भद्रा के गर्भ से आनन्द का जन्म और तपस्या, ब्रह्माजी द्वारा उसका मनु बनाया जाना ११२
६९. वैवस्वत मन्वन्तर आरम्भ–सूर्य के पुत्र रूप से वैवस्वत मनु का जन्म और उनकी माता संज्ञा का गृह-त्याग १२०
७०. सूर्यस्तव और अश्विनीकुमारों की उत्पत्ति–देवताओं द्वारा सूर्य की स्तुति और अश्विनीकुमारों का जन्म १२६
७१. वैवस्वत मन्वन्तर कथन १३१
७२. सावर्णिक मन्वन्तर १३३
७३. देवी माहात्म्य–मधु कैटभ बध–राजा सुरथ और समाधि वैश्य का मेधा ऋषि से प्रश्न–मेधा ऋषि का देवी उपाख्यान सुनना––मधुकैटभ का देवी द्वारा बध १३५
७४. महिषासुर सैन्य बध–देवताओं के सम्मिलित तेज से देवी का आविर्भाव और महिषासुर की सेना से भयंकर संग्राम १४६
७५. महिषासुर बध–महिषासुर के प्रमुख सेनाध्यक्षों और स्वयं उसका देवी द्वारा मारा जाना १५६
७६. शक्रादिकृत देवी-स्तुति १६३
७७. देवी से शंभुदूत का कथन–शुंभ और निशुंभ का त्रैलोक्य पर अधिकार और देवताओं की सहायतार्थ देवी की उन पर चढ़ाई, शुंभ का विवाह प्रस्ताव लेकर दूत भेजना १७७
७८. धूम्रलोचन बध १८०
७९. चण्ड-मुण्ड बध १८३
८०. रक्त-बीज बध १८७
८१. निशुम्भ बध १९५

८२. शुम्भ-बध २०१
८३. देवी-स्तोत्र–समस्त दानवों के मारे जाने पर देवताओं द्वारा देवी की स्तुति २०९
८४. देवताओं को देवी का वरदान–देवी के चरित्र श्रवण करने और देवी उपासना का महान् माहात्म्य २१३
८५. सुरथ और वैश्य को देवी का वरदान २१९
८६. पाँच मन्वन्तर कथन–चार सावर्णि और पाँचवें रौच्य नामक मन्वन्तरों के देवता मुनि और राजा २२२
८७. रुचि को पितरों का गार्हस्थ उपदेश–प्रजापति रुचि का वैराग्य धारण और पितरों का उनको गृहस्थ का उपदेश। २२६
८८. रुचिकृत पुत्रस्तव–पत्नी की प्राप्ति के लिये रुचि का तप करना ब्रह्माजी की सम्मति से पितरों की स्तुति करना २३०
८९. रुचि को पितरों का वरदान–पितरों का प्रकट होकर रुचि को पत्नी और रौच्य नामक मनु के जन्म का वरदान देना और इस स्तोत्र की महिमा कथन करना। २३७
९०. रौच्य मनु का जन्म–प्रम्लोचना की कन्या मालिनी से रुचि का विवाह और रौच्य की उत्पत्ति २४२
९१. भौत्य मन्वन्तर आरम्भ–भूति मुनि की पुत्र के लिए तपस्या–शान्ति मुनि द्वारा अग्नि की स्तुति २४४
९२. सर्व मन्वन्तर श्रवण फल कथन–अग्नि का प्रकट होकर शांति को वरदान देना और भूति मुनि से भौत्य नामक मनु की उत्पत्ति २५५
९३. राज वंशानुकीर्तन–सृष्टि का आरम्भ और ब्रह्माजी द्वारा रचना कार्य आरम्भ २६२
९४. वेदमय मार्तण्ड की उत्पत्ति २६६
९५. ब्रह्मकृत रवि स्तव २६९
९६. कश्यप प्रजापति की सृष्टि–देवासुर संग्राम का आरम्भ और अदिति द्वारा भगवान भास्कर की स्तुति २७१
९७. अदिति के गर्भ से आदित्य का जन्म २७७

९८. भानुतन लेखन—भगवान् भास्कर के असह्य तेज के कारण उनकी पत्नी का गृह त्याग—भास्कर का विश्वकर्मा को अपना तेज कम करने का आदेश २८१
९९. विश्वकर्मा द्वारा सूर्य स्तवन २९१
१००. रवि महात्म्य वर्णन २९३
१००. (क) राज्यवर्द्धन की आयुवृद्धि—महाराज राज्यवर्द्धन के सुशासन के फलस्वरूप उनकी प्रजा का प्रेम और सूर्य भगवान् की आराधना द्वारा उनकी आयुवृद्धि कराना। २९६
१००. (ख) राजा और प्रजा की आयुवृद्धि ३०८
१००. (ग) सूर्य वंशानुक्रम ३१५
१००. (घ) पृषध्रोपाख्यान ३१७
१०१. नाभागोपाख्यान (१)—द्विष्ट राजा के पुत्र नाभाग का वैश्य-कन्या से विवाह करना और राज्याधिकार से वंचित होना ३२१
१०२. नाभागोपाख्यान (२) ३२६
१०३. कृपावती उपाख्यान ३३१
१०३. (क) भलन्दन वत्सप्रीति चरित्र—वत्सप्रीति द्वारा कृजृम्भ राक्षस के बध का वर्णन
१०४. खनित्र चरित्र (१) ३४५। १०५. खनित्र चरित्र (२) ३५३ १०६, विविंश चरित्र ३५६। १०७, खनित्र चरित्र (३) ३५९। १०८, करन्धम चरित्र ३६४। १०९, अवीक्षित चरित्र (१) ३६८। ११०, अवीक्षित चरित्र (२) ३७२। १११, अवीक्षित चरित्र (३) ३७५। ११२, अवीक्षित चरित्र (४) ३८५। ११३, अवीक्षित चरित्र (५) ३९०। ११४, मरुत जन्म वर्णन ३९७। ११४, मरुत्त-चरित्र (१) ४०२। ११६, मरुत्त-चरित्र (२) ४०८। ११७, मरुत्त-चरित्र (३) ४१४। ११८, मरुत्त चरित्र (४) ४१७। ११९, नरिष्यन्त चरित्र ४२५। १२०, दम चरित्र (१) ४३०। १२१, दम-चरित्र (२) ४३९। १२२, दम-चरित्र (३) ४४४। १२३, वपुष्मान बध ४४७। १२४, पुराण-श्रवण-पठन फल ४५२। १२५, मार्कण्डेय पुराण एक—अध्ययन ४५८—५०४।

दो शब्द

भारतीय धार्मिक साहित्य का क्षेत्र बहुत विस्तृत है। उसमें अध्यात्म, नीति, चरित्र से लेकर इतिहास, भूगोल, उद्योग-धन्धे, कला-कौशल सब विषयों का समावेश किया गया है। इसका तात्पर्य यह है कि भारतीय मनीषियों ने जीवन की प्रत्येक गति-विधि का सम्बन्ध धर्म से माना है और अपने अनुयाइयों को सदैव यही शिक्षा दी है कि वे कभी धर्मविमुख आचरण न करें। शास्त्रों में मानव-जन्म के जो चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष गिनाये गये हैं, उनमें भी धर्म को प्रथम स्थान इसी उद्देश्य से दिया गया है कि मनुष्य जीवन निर्वाह और सांसारिक सुख प्राप्त करने के लिये अवश्य ही अर्थ का उपार्जन करे और उसके द्वारा भोगों का भी उपभोग करे, पर उसकी कर्म-पद्धति सदैव धर्म द्वारा नियन्त्रित होनी आवश्यक है, तभी वे जीवन के अन्तिम लक्ष्य—मोक्ष तक पहुंचने में समर्थ हो सकेंगे।

पुराणों की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि वे इन सिद्धांतों को नित्य प्रति की साधारण और असारण घटनाओं के रूप में ऐसे ढंग से हमको सुनाते हैं जिससे हम जान सकें कि संसार के छोटे-बड़े, सामान्य-असामान्य और आकस्मिक कर्तव्यों का पालन किस प्रकार धार्मिक आदेशों की रक्षा करते हुए किया जा सकता है। इस विवेचन को हर श्रेणी का—साधारण बुद्धि का और अनपढ़ व्यक्ति भी सुन और समझ सके, इसके लिये उन्होंने उसे मनोरंजक कथाओं का रूप दिया है और बहुत ही सरल वर्णन शैली का प्रयोग किया गया है। ऐसी दशा में जो आलोचक प्रवृत्ति के सज्जन पुराणों की एक-एक बात को इतिहास, तर्क और तथ्यों की कसौटी पर कसने का प्रयत्न करते हैं, उसका समय और श्रम प्रायः व्यर्थ ही जाता है। वे अपनी समझ से पौराणिक कथाओं का खण्डन करके कोई बड़ा काम करते हैं। पर पुराणों के वास्तविक स्वरूप के ज्ञाता विद्वान् लोग तो इस प्रकार की लम्बी-चौड़ी आलोचनाओं को निरर्थक समझते हैं, और केवल श्रद्धाभाव से कथा सुनने वाली अनपढ़ जनता पर भी उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वे प्राचीन ऋषि महर्षियों के नाम पर लिखे धर्म ग्रन्थों के विरुद्ध कोई बात सुनना ही नहीं चाहते